PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Dainik Bhaskar, Delhi
Fri, 09 Jun 2017, Page 6
Width: 40.61 cms, Height: 19.80 cms, a3r, Ref: 25.2017-06-09.146

पुलिस के ऑपरेशन में 2049 परिवारों को मिली 'स्माइल'

पुलिस के अभियान में चाइल्ड लाइन और महिला एवं बाल विकास की टीमों ने भी दिया सहयोग

क्राइम रिपोर्टर | भोपाल

राजधानी पुलिस ने 'ऑपरेशन स्माइल' चलाकर 2049 बच्चों को उनके परिवारों से मिला दिया है।

कुछ बच्चों को उनके परिवार तक पहुंचाने की कोशिशें की जा रही हैं, जबकि 12 बच्चे ऐसे हैं जिनका पता अब तक नहीं मिला है। इसलिए उन्हें आश्रय गृह में भेजा गया है। इनमें से किसी ने भाई से लड़कर तो किसी ने पिता की डांट से घबराकर अपना घर छोड़ दिया था।

पुलिस मुख्यालय के निर्देश के बाद शहर में एक से 30 मई तक यह अभियान चलाया गया। इसमें चाइल्ड लाइन और महिला एवं बाल विकास की टीमों ने भी पुलिस का साथ दिया। 'ऑपरेशन स्माइल' के तहत दो अलग-अलग अभियान चलाए गए। एक में बीते कुछ वर्षों में गुम हुए बच्चों की तलाश की गई। वहीं, दूसरे अभियान के तहत उन बच्चों को तलाशा गया, जो घर से दूर रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, चौराहों या सड़कों पर भीख मांगते नजर आए। अलग-अलग टीमों ने इस दौरान कुल 2061 को ढूंढ निकाला। एएसपी हितेश चौधरी ने बताया कि ये अभियान आगे भी चलाया जाता रहेगा।

अभियान के दौरान धार्मिक स्थलों और स्टेशन पर मिले सबसे ज्यादा बच्चे

अभियान के दौरान पुलिस ने घर से दूर रह रहे 2049 बच्चों को उनके परिजनों को सौंप दिया है। 81 बच्चे धार्मिक स्थलों पर मिले, रेलवे प्लेटफॉर्म से 38 बच्चों को ढूंढा गया। 116 बच्चे बस स्टैंड से और 913 बच्चे सड़क पर घूमते मिले। 913 बच्चों को अन्य अलग-अलग स्थानों से दस्तयाब किया गया। 12 बच्चे ऐसे मिले हैं, जिनके घर का पता अभी नहीं मिल सका है। इनमें आठ बालक और चार बालिकाएं शामिल हैं।

घर का पता नहीं मिलने से 12 बच्चों को भेजा आश्रय गृह

केस-1 मैं तो यहीं खुश हूं, नहीं जाना घर

12 साल का नीलेश इटारसी से भागकर भोपाल आया था। ऑपरेशन स्माइल की टीम को वह ट्रेन में झाड़ू लगाते हुए मिला। 10 दिन से उसे चाइल्ड लाइन में रखा गया है। पिता शराब पीकर मारपीट करते हैं और मां अब इस दुनिया में नहीं। वह कहता है कि अब यहां अच्छा लगने लगा है और मैं घर वापस नहीं जाना चाहता।

केस-2 पता नहीं बिहार में कहां है मेरा घर

14 साल का अख्तर हुसैन की कहानी थोड़ी अलग है। वह बिहार से काफी समय पहले भाग गया था। इस दौरान वह अलग-अलग शहरों में रहा और इन दिनों बालगृह में है। ये पता नहीं कि बिहार के किस शहर या गांव में उसका घर है। टीम को वह रेलवे स्टेशन पर मिला था। अलग-अलग ट्रेनों से होता हुआ भोपाल पहुंच गया।